शिवभक्ति

एक चरवाहा शिवजी के मंदिर में जाकर प्रतिदिन खाने से पहले 4 डंडे शिवलिंग पर लगाता था। एक दिन ज्यादा व्यस्तता के कारण वह खाना खाने की तैयारी करके ज्योंही एक निवाला मुँह में डाला तो उसे याद आया कि आज शिवजी के ऊपर चार डंडे मारना भूल गया हूँ। उसने उस निवाले को मुँह से निकालकर जल्दी से मुख को धोकर शिव मंदिर पहुँचा। वहां उसने शिवलिंग पर चार डंडे लगाये। उसकी भक्ति देखकर शिवजी प्रसन्न हुए और प्रकट होकर आशीर्वाद दिया।

संग्रहकर्त्ताः-
पंकज कुमार
ए ए आर,एस टी डी ग्रुप
मानकीकरण निदेशालय

स्वभाव

एक महात्मा नदी में स्नान कर रहे थे उन्होंने देखा एक बिच्छू जल में डूब रहा था। उन्होंने उसे हाथ से उठाकर किनारे रखना चाहा, परन्तु बिच्छू ने डंक मार दिया। दर्द के कारण बिच्छू पुनः पानी में गिर गया। महात्मा ने फिर उठाया तो बिच्छू ने वही काम फिर किया। पास स्नान कर रहे शिष्यों ने पूछा, 'महात्मन् आप इसे क्यों उठा रहे हैं। यह बार–बार आपको डंक मार रहा है। महात्मा ने कहा यह इसका स्वभाव है और इसे बचाना मेरा काम है। साधु के वचन सुनकर सभी नतमस्तक हो गये।

संग्रहकर्त्ताः-
पंकज कुमार
ए ए आर,एस टी डी ग्रुप
मानकीकरण निदेशालय

भाग्य और पुरुषार्थ

राजा विक्रमादित्य के दरबार में कई ज्योतिषी थे। मगर वह कोई काम शुभ लग्न देखकर या ज्योतिषी की सलाह लेकर नहीं करते थे। एक दिन राज ज्योतिषी उनके पास आए और बोले, 'महाराज, आप के दरबार में कई ज्योतिषी हैं। आपकी तरफ से उन्हें सभी सुविधाएं मिली हुई हैं, पर आप कभी हमारी सेवाएं नहीं लेते। आज मैं आपकी हस्तरेखा देखकर यह जानना चाहता हूँ कि आप ऐसा क्यों करते हैं ?' राजा ने कहा, 'मेरे पास इतना समय नहीं रहता कि मैं आप लोगों से सलाह ले सकूं। जहां तक हस्तरेखा की बात है तो मैं इसमें विश्वास नहीं रखता। लेकिन आप कह रहे हैं तो देख लीजिए।' हाथ देख कर राज ज्योतिषी चक्कर में पड़ गए। उनकी आवाज बंद हो गई। राजा ने पूछा, 'क्या हुआ। आप इतने परेशान क्यों हैं ?' राज ज्योतिषी ने कहा, 'राजन्, आप की हस्तरेखाएं तो कुछ और कहती हैं। ज्योतिषी के अनुसार आपको तो दुर्बल और दीन–हीन होना चाहिए था। लेकिन आप तो इसके विपरीत हैं। हजारों साल से ज्योतिष विद्या पर विश्वास करने वाले लोग आपकी रेखाएं देखकर भ्रमित हो जाएंगे। समझ में नहीं आ रहा कि ज्योतिष को सच मानूं या आपकी रेखाओं को।' विक्रमादित्य ने कहा, 'अभी तो आपने मेरे बाहरी लक्षणों को ही देखा है, अब आप हमारे अंदर झांक कर देखिए।' इतना कह कर राजा ने तलवार की नोक अपने सीने में लगा दी। राज ज्योतिषी घबड़ा कर बोले, 'बस महाराज रहने दीजिए।' राजा ने कहा, 'ज्योतिषी महाराज, आप परेशान मत हों। ज्योतिष विद्या भी तभी सार्थक सिद्ध होती है, जब मनुष्य में कुछ करने का संकल्प हो। हस्तरेखाएं तो भाग्य नहीं बदल सकतीं लेकिन मनुष्य में यदि पुरुषार्थ है, अभाग्य से लड़ने की शक्ति है तो उसकी नकारात्मक रेखाएं भी अपने रूप बदल सकती हैं। लगता है मेरे साथ ऐसा ही हुआ है।' राज ज्योतिषी अवाक् हो गए।

संग्रहकर्त्ताः-
पंकज कुमार
ए ए आर,एस टी डी ग्रुप
मानकीकरण निदेशालय

हमारी ख्वाहिश

सर फ़रोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है,
देखना है जोर कितना बाजू–ए–कातिल में है।

रहबरे राहें मुहब्बत, रह न जाना राह में,
लज्जते सहरा नवर्दी दूरी–ए–मंजिल में है।

वक्त आने दे बता देगें तुझे ऐ आसमां।
हम अभी से क्या बताएं, क्या हमारे दिल में है।

अब न अगले वलवले हैं और न अरमानों की भीड़,
एक मिट जाने की हसरत, अब दिले 'विस्मिल' में हैं।

आज मक़तल में ये क़ातिल कह रहा है बार–बार,
क्या तमन्ना–ए–शहादत, भी किसी के दिल में है।

ऐ शहीदे–मुल्को–मिल्लत तेरे जज्बों के निसार,
तेरी कुर्वानी की चर्चा, गैर की महफिल में है।

'राम प्रसाद विस्मिल'

संग्रहकर्त्ताः-
पंकज कुमार
ए ए आर,एस टी डी ग्रुप
मानकीकरण निदेशालय

चिट्ठियाँ

लेटर बक्स में पड़ी हुई चिट्ठियाँ

अनंत सुख–दुख वाली अनंत चिट्ठियाँ

लेकिन कोई किसी से नहीं बोलती

सभी अकेले–अकेले

अपने मंजिल पर पहुँचने का इंतजार करती हैं।

कैसा है, हम सभी का एक साथ होना

दूसरों के साथ हँसना न रोना

लेटर क्या हम भी बक्स की चिट्ठियाँ हो गये हैं।

संग्रहकर्त्ताः-
पंकज कुमार
ए ए आर,एस टी डी ग्रुप
मानकीकरण निदेशालय

समस्या समाधान

एक प्रसिद्ध महात्मा थे। वह सब प्रकार की समस्याओं का समाधान तुरन्त कर देते थे। एक दिन एक महिला अपने बच्चे को लेकर उनके पास आयी और बोली महराज यह बच्चा गुड़ (मिठाई) ज्यादा खाता है। इसकी यह आदत छुटा दीजिए। महात्मा ने थोड़ी देर सोचा और कहा माँ जी आप कल आना। मैं इस समस्या का समाधान कर दूँगा। महिला दूसरे दिन पुनः गयी तो महात्मा ने बच्चे से कहा, 'बेटा तुम आज से ज्यादा मिठाई मत खाना। इसे सुनकर महिला ने कहा, 'महराज इस बात को तो आप कल भी बता सकते थे। तो इस पर संत ने कहा माँ', कल तक मैं भी गुड़ खाता था। जब तक मेरे अंदर कोई बुराई है तो मैं दूसरों की बुराई का निराकार कैसे कर सकता था। संत की बात सुनकर बच्चे ने गुड़ खाना छोड़ दिया।

संग्रहकर्त्ताः-
पंकज कुमार
ए ए आर,एस टी डी ग्रुप
मानकीकरण निदेशालय